



UNIVERSITY NEWS 27 MAY 2026

DAINIK JAGRAN

TIMES OF INDIA

HINDUSTAN

गले के कैंसर की जल्द पहचान के लिए तैयार किया एआई माडल

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के कंप्यूटर साइंस विभाग ने गले में होने वाले कैंसर की जल्दी पहचान के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) माडल तैयार किया है। दावा है कि पहली इंडोस्कोपी में ही यह माडल कैंसर की पहचान करने में सक्षम होगा। यह शोध मंगलवार को प्रतिष्ठित जर्नल सिंग्रार नेचर में प्रकाशित हुआ है। शोध में डा. पुनीत मिश्रा, शोधार्थी मो. उस्मान, डा. सिद्धार्थ और श्रैण्टी विशेषज्ञ डा. राकेश शीवास्तव ने सहयोग दिया है।

लखनऊ विश्वविद्यालय के कंप्यूटर साइंस विभाग ने गले में होने वाले कैंसर की जल्दी पहचान के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) माडल तैयार किया है। दावा है कि पहली इंडोस्कोपी में ही यह माडल कैंसर की पहचान करने में सक्षम होगा। यह शोध मंगलवार को प्रतिष्ठित जर्नल सिंग्रार नेचर में प्रकाशित हुआ है। शोध में डा. पुनीत मिश्रा, शोधार्थी मो. उस्मान, डा. सिद्धार्थ और श्रैण्टी विशेषज्ञ डा. राकेश शीवास्तव ने सहयोग दिया है।

डा. पुनीत मिश्रा ने बताया कि लैरींजियल कार्सिनोमा, जिसे आम भाषा में गले का कैंसर कहा जाता है, दुनिया भर में और विशेष रूप से दक्षिण एशिया में एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या बना हुआ है। पारंपरिक रूप से, बोकल कार्ड की सामान्य गांठों, कैंसर-पूर्व की गंभीर स्थितियों और स्क्वेमस सेल कार्सिनोमा के बीच अंतर स्पष्ट करने के लिए दर्दनाक बायोप्सी या दर्शकों के अनुभव वाले विशेषज्ञों की आवश्यकता होती थी। नैरो-बैंड इमेजिंग तकनीक ने विशिष्ट प्रकाश तरंगदैर्घ्य का उपयोग करके



खबर को त्वार से पढ़ने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें।

AMRIT VICHAR



लविवि में आयोजित भंडारे में शामिल शिक्षक।

लविवि में चार विभागों ने कराया भंडारा

अमृत विचार, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय में डीन रट्टेडेंस वेलफेयर, प्रामी विज्ञान विभाग तथा ईआईएलसीपी-पीसी-आरपी, इंस्टीट्यूट ऑफ वाइल्डलाइफ साइंसेज के तत्वावधान में भंडारा कराया गया। शुभारंभ प्रोफेसर अमिता कनौजिया एवं डॉ. भावना मिश्रा ने किया। इसके बाद प्रसाद वितरण किया गया। पूर्व प्राध्यापक प्रो. पद्मा स्वसेना, प्रो. यू. डी. शर्मा, प्रो. मोनिशा बनर्जी, प्रो. गीतांजलि मिश्रा, प्रॉक्टर प्रो. राकेश द्विवेदी, जैव रसायन विभाग के प्रो. सुधीर मेहरोत्रा, रसायन विभाग के प्रो. अनिल मिश्रा, डॉ. राजेंद्र वर्मा एवं डॉ. शिनीत वर्मा, डॉ. श्यामलेश, डॉ. कल्पना सिंह, डॉ. अमित त्रिपाठी, डॉ. सुवित स्वस्व, डॉ. राजेश खरवार, डॉ. मनोज कुमार, डॉ. मधु गुप्ता, डॉ. नितीश राय एवं डॉ. निधि द्विवेदी उपस्थित रहे।

DAINIK JAGRAN

पीएचडी प्रवेश के लिए 29 तक जमा करें आवंटन पत्र

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में सत्र 2025-26 के पीएच.डी. पदार्थों में प्रवेश के लिए 27 मई तक तिथि तय की गई थी। लविवि अब 29 मई तक संबंधित विभाग में आवंटन पत्र व फीस रसीद जमा करने का मौका देगा है। अभी तक 27 मई तक तिथि तय की गई थी। लविवि इसकी सूचना जारी की है। वि.

Now, opt for AI tech in BA course at Lucknow University

Mohita.Tewari @timesofindia.com

Lucknow: If you are a humanities student and want to study computer science as one of your subjects in BA, then you need not look for admission in Delhi University or other universities, as now Lucknow University is offering computer science as a subject in BA.

In a major push towards advanced computing and artificial intelligence, LU will introduce nine programmes in the field. The BA curriculum will include AI, the use of AI tools, applying AI across humanities disciplines, Python and more. Four degree programmes, two diploma programmes, and two certificate programmes will be offered from the 2026-27 academic session.

"About 75 seats are available in computer science,



FROM 2026-27 SESSION

with subject combinations such as education, psychology, and women and gender studies. A student pursuing a BA with computer science will be taught advanced computing concepts that have utility in the humanities. From understanding what artificial intelligence is, to using AI tools and learning Python programming, everything will be covered during the course," said Puneet Misra, head of the department of computer science and director of LU's APJ Kalam Centre for Inno-

vation. He said blending technology with humanities subjects such as economics, sociology and psychology enables students to develop technology solutions with a focus on social impact, user behaviour and ethics.

"Two certificate courses and two diploma courses will be offered at the APJ Kalam Centre to help students develop innovative ideas using AI and learn how to apply AI for human welfare. Certificate and diploma courses in areas such as AI in medical services, AI in education, and AI in media will be introduced shortly," Misra said.

He said LU has opened an application window for BCA in AI and machine learning, BCA (Data science and analytics), BCA (Cyber security and forensics) and BCA (Internet of Things), with 75 seats each.

AMAR UJALA

गले के कैंसर की पहचान करेगा नया एआई माडल

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के कंप्यूटर साइंस विभाग के अध्यक्ष प्रो. पुनीत मिश्रा ने एआई आधारित ऐसा माडल विकसित किया है, जो गले के कैंसर की पहचान में मददगार साबित होगा। इससे समय पर इलाज में सहायता मिलेगी। प्रो. मिश्रा का यह शोध हाल ही में सिंग्रार नेचर में प्रकाशित हुआ है। इस शोध में दो शोधार्थियों मो. उस्मान और डॉ. सिद्धार्थ की भी अहम भूमिका रही। प्रो. पुनीत मिश्रा ने बताया कि शोध में नैरो-बैंड इमेजिंग (एनबीआई) तकनीक की मदद से लैरींजियल कार्सिनोमा यानी गले के कैंसर के विभेदक निदान के लिए एक मल्टीक्लास एआई क्लासीफायर



प्रो पुनीत मिश्रा।

कैंसर के उपचार में एआई हो रहा प्रभावी

एआई आधारित शोध दुनिया भर में कैंसर के खिलाफ लड़ाई को तेज कर रहे हैं। वैश्विक स्वास्थ्य संगठन व दवा कंपनियों एशिया में डिजिटल पैथोलॉजी को बढ़ावा दे रही हैं, जिससे स्नान और फेफड़ों के कैंसर का सटीक इलाज संभव हो रहा है। यह तकनीक विशिष्ट बायोमार्कर पहचानती है, डॉक्टरों का स्लाइड देखने का समय 36 फीसदी कम करती है। अग्रणी कैंसर संस्थान डिजिटल सहायक विकसित कर रहे हैं, जो रोगी के जीनोमिक डेटा व लिक्विड बायोप्सी का विश्लेषण करते हैं। इससे डॉक्टरों को प्रभावी उपचार विकल्प मिलते हैं, जिससे शुरुआती पहचान से कैंसर ठीक होने योग्य बनाया जा रहा है।

तैयार किया गया है। यह तकनीक डीप कनवोल्यूशनल न्यूरल नेटवर्क आर्किटेक्चर पर आधारित है, जिसे हजारों हाई-रिजॉल्यूशन एंडोस्कोपी छवियों पर प्रशिक्षित किया गया। एआई माडल एनबीआई छवियों को तेजी से स्कैन कर प्रभावित हिस्सों की पहचान करता है और सामान्य गांठों, कैंसर पूर्व स्थितियों तथा स्क्वेमस सेल कार्सिनोमा के बीच अत्यधिक सटीकता से अंतर कर सकता है। प्रो. पुनीत मिश्रा के अनुसार, अब तक गले के कैंसर की पुष्टि के लिए बायोप्सी

और अनुभवी विशेषज्ञों पर निर्भरता रहती थी। कई बार शुरुआती लक्षणों की पहचान में देरी भी हो जाती थी। ऐसे में यह एआई तकनीक डॉक्टरों के लिए प्रभावी डिजिटल सहायक साबित हो सकती है। उन्होंने बताया कि भारत जैसे विकासशील देशों में, जहां विशेषज्ञ चिकित्सकों और अत्याधुनिक उपकरणों की कमी है, वहां यह तकनीक शुरुआती चरण में कैंसर पकड़ने में मददगार होगी। इससे मरीजों को समय पर उपचार मिल सकेगा और मृत्यु दर कम करने में भी सहायता मिलेगी।

उपलब्धि | लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो. पुनीत ने विकसित किया घातक बीमारी के लक्षण बताने वाला माडल

एआई माडल से गले के कैंसर की पहचान

लखनऊ, संवाददाता। कैंसर जांच के क्षेत्र में लखनऊ विश्वविद्यालय को एक बड़ी सफलता मिली है। विश्वविद्यालय के कंप्यूटर विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. पुनीत मिश्रा ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पर आधारित एक ऐसा उन्नत माडल विकसित किया है, जो गले के कैंसर (लैरींजियल कार्सिनोमा) की शुरुआती पहचान को अधिक तेज, सटीक और आसान बना देगा।

तेज और सटीक होगी कैंसर की पहचान: हाल ही में प्रकाशित हुए इस शोध में नैरो-बैंड इमेजिंग (एनबीआई) तकनीक की मदद से

मरीजों को सही समय पर मिल सकेगा इलाज

प्रो. मिश्रा के अनुसार, भारत जैसे विकासशील देशों में जहां विशेषज्ञ चिकित्सकों और अत्याधुनिक उपकरणों की कमी है, वहां यह तकनीक डॉक्टरों के लिए एक प्रभावी डिजिटल सहायक साबित होगी। इससे शुरुआती चरण में ही कैंसर को पकड़कर मरीजों का समय पर इलाज शुरू किया जा सकेगा, जिससे मृत्यु दर को कम करने में बड़ी मदद मिलेगी। विशेषज्ञों के अनुसार, एआई आधारित यह शोध भविष्य में कैंसर जांच प्रणाली को अधिक सुलभ, किफायती और विश्वसनीय बनाने की दिशा में अहम भूमिका निभा सकता है।



प्रो. पुनीत मिश्रा

गले के कैंसर के विभेदक निदान के लिए एक 'मल्टीक्लास एआई क्लासिफायर' तैयार किया गया है। यह तकनीक डीप कनवोल्यूशनल न्यूरल

नेटवर्क आर्किटेक्चर पर आधारित है, जिसे हजारों हाई-रिजॉल्यूशन एंडोस्कोपी छवियों पर प्रशिक्षित किया गया है।

बायोप्सी के कारण कैंसर का पता देरी से चलता है

यह एआई माडल एनबीआई छवियों को तेजी से स्कैन कर प्रभावित हिस्सों की पहचान करता है और सामान्य गांठों, कैंसर-पूर्व स्थितियों तथा स्क्वेमस सेल कार्सिनोमा के बीच अत्यधिक सटीकता से अंतर स्पष्ट कर सकता है। अब तक गले के कैंसर की पुष्टि के लिए बायोप्सी और अनुभवी डॉक्टरों पर निर्भर रहना पड़ता था, जिससे कई बार शुरुआती लक्षणों की पहचान में देरी हो जाती थी। ऐसे में यह एआई तकनीक डॉक्टरों के लिए एक प्रभावी डिजिटल सहायक साबित हो सकती है।

AMRIT VICHAR

शोध

लविवि के डॉ. पुनीत मिश्रा और उनके शोधार्थी मोहम्मद उस्मान और सिद्धार्थ चौरसिया ने विकसित की तकनीक

नैरो बैंड इमेजिंग से होगी गले के कैंसर की सटीक पहचान

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: लखनऊ विश्वविद्यालय के कंप्यूटर विज्ञान विभाग के शोधार्थियों ने एआई के प्रयोग से गले के कैंसर की पहचान के लिए नैरो बैंड इमेजिंग तकनीक विकसित की है। यह तकनीक दुनिया भर में गले के कैंसर मरीजों की शुरुआती पहचान को अधिक तेज, सटीक और आसान बना सकता है। बेहद आसान और सटीक जानकारी प्रदान करेगा।

नैरो-बैंड इमेजिंग तकनीक से कैंसर विभेदक निदान को एआई क्लासिफायर तैयार

माडल विकसित किया है। प्रो. मिश्रा का यह शोध हाल ही में प्रकाशित हुआ है और इसे कैंसर निदान की दिशा में बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है। शोध में नैरो-बैंड इमेजिंग (एनबीआई) तकनीक की मदद से लैरींजियल कार्सिनोमा यानी गले के कैंसर के विभेदक निदान के लिए एक मल्टीक्लास एआई क्लासिफायर तैयार किया गया है। यह तकनीक डीप कनवोल्यूशनल न्यूरल नेटवर्क आर्किटेक्चर पर आधारित है, जिसे हजारों हाई-रिजॉल्यूशन एंडोस्कोपी

गले के कैंसर से मृत्यु दर के आंकड़े

भारत में वर्ष 2024 में कैंसर से कुल अनुमानित मौतें लगभग 8.74 लाख थीं। इनमें अल्ट्रै केविटी और फेरिक्स (गला, फूफू) कैंसर से अनुमानित मौतें लगभग 1,16,744 थीं, जो कुल मौतों में सबसे अधिक कैंसर जिन मौतों में शामिल है। इस श्रेणी की मृत्यु दर लगभग 16.1 प्रति 1 लाख आबादी दर्ज की गई।



बायोप्सी की जरूरत होगी खत्म

अब तक गले के कैंसर की पुष्टि के लिए बायोप्सी और अनुभवी विशेषज्ञों पर निर्भरता रहती थी। कई बार शुरुआती लक्षणों की पहचान में देरी भी हो जाती थी। ऐसे में यह एआई तकनीक डॉक्टरों के लिए एक प्रभावी डिजिटल सहायक साबित हो सकती है। प्रो. मिश्रा ने बताया कि भारत जैसे विकासशील देशों में, जहां विशेषज्ञ चिकित्सकों और अत्याधुनिक उपकरणों की कमी है, वहां यह तकनीक शुरुआती चरण में कैंसर पकड़ने में मददगार होगी। इससे मरीजों को समय पर उपचार मिल सकेगा और मृत्यु दर कम करने में भी सहायता मिलेगी।

AMAR UJALA

लविवि : हर छात्र को मिलेगा मेंटर, सुलझाएंगे समस्याएं

लखनऊ। लविवि में छात्रों की समस्याओं के त्वरित समाधान और पारदर्शिता के लिए कुलपति प्रो. जेपी सैनी ने कई निर्देश जारी किए हैं। मेंटरशिप कार्यक्रम शुरू होगा। इसके तहत प्रत्येक छात्र को प्रवेश के दिन ही एक शिक्षक मार्गदर्शक मिलेगा। यह मार्गदर्शक छात्रों की समस्याओं और कॅरिअर संबंधी संशय को दूर करेंगे। साथ ही लविवि ने प्रवेश के समय ही छात्रवृत्ति फॉर्म भरवाने का निर्णय लिया है। लविवि की अहम बैठक में निर्देश जारी करते हुए कुलपति प्रो. जेपी सैनी ने बताया कि छात्रवृत्ति फॉर्म अपने संकाय में ही जमा किए जा सकेंगे। यह व्यवस्था द्वितीय परिसर के छात्रों के लिए विशेष रूप से लाभकारी होगी, जिन्हें पहले मुख्य परिसर आना पड़ता था। इस संबंध में अधिष्ठाता छात्र कल्याण अमिता कनौजिया को समाज कल्याण अधिकारी से वार्ता करने के लिए निर्देशित भी किया गया है। अधिष्ठाता छात्र कल्याण अमिता कनौजिया, निदेशक प्रवेश पंकज माथुर, समन्वयक प्रवेश अनित्य गौरव और चीफ प्रोवोस्ट आशीष अवस्थी भी उपस्थित रहे। (माई सिटी रिपोर्टर)